AMALTAS COLLEGE OF EDUCATION
(UNIT OF SANDAPINI GURUKUL FOUNDATION)
amaltas
COLLEGE OF EDUCATION
Newsletter
Issue 4 | Vol 2 | Oct - Nov 2022

Student Orientation - 2022

On 22nd October 2022, Amaltas College of Education extended a warm welcome to their 6th batch of B.Ed. students. The program started with lighting of the lamp followed by an address by the trustees who motivated the students to use their time in college wisely, for academic learning and training. The day included formal introductions as well as several opportunities for informal interactions with the faculty, staff and trustees of the college.

Our ex-students Pritty Kumari and Santosh Kumar spoke of their experience and learning as students of this college and their achievements. An ice breaker activity was organized followed by a group photo of the new trainees.

Post lunch the students were taken for a campus tour where they spent the rest of the afternoon in their new classroom. The faculty gave them a quick overview of the syllabus and the calendar of academic events and told them about the rules and regulations of the college.

Indian Constitution Day

Constitution Day was celebrated in the college on 26th November 2022 to commemorated the adoption of the Constitution of India by the Constituent Assembly in 1949. A quiz competition for the students was organised on this occasion. Eight teams from B.Ed. and D.El.Ed. participated in the quiz. The questions were based on the making, amendments and the implementation of the constitution in the country. After two knock out rounds team 'Sovereignty' defeated team 'Democratic' in the final round to win the title. Ekta Kumari, Anuradha Pushpad & Shabnam Parween from team 'Sovereignty' received the winners prize from our principal whereas Deepak Kumar, Madhu Kumari & Pooja Kumari were awarded the runners up prize.

Dr. Rajwant Singh and Mr. Praween Singh Kushwaha conducted the quiz and the stage designing was done by Mr Roshan Kumar.

University Selection Committee Meeting

The University selection committee meeting was held on the 18th of October 2022 in the college for recruitment of faculty in various subjects. The team constituted Dr Kumari Anjana, Deputy Registrar of Aryabhatta Knowledge University, Patna and Dr Vandana Kumari, Dean - Educational Research and Training , Aryabhatta Knowledge University, Patna.

The team interviewed 8 out of the 12 candidates who had applied for the posts of Assistant Professor and the Principal. Finally the team selected 6 candidates for the post of Assistant Professor and a Principal for the college. This was further approved by the Governing Body members in the GB meeting held on 16th November 2022..

Governing Body Meeting

The Governing Body meeting was organised on 16th November 2022 in the college Trustee room. The main agenda of the meeting was approval of the selection of the teaching staff including the Principal. The meeting was chaired by the Chairman, Sri Ranjit Sinha . Members present were Dr. Kumari Anjana, University representative, Smt. Ratna Choudhry, Secretary, Sri Saurabh Shekhar, faculty representative, Principal in charge and trustees Sri Yashvir Sinha & Smt. Ranjana Sinha. The selections of all the 7 teaching staff were approved by the board. The Chairman raised issues faced by the college in the B.Ed. admission process and requested the University representative to forward our concerns to the Nodal University with the hope that these will get addressed before the next CET.

'शिक्षा में कला एवं रंगमंच' का सफ़र

अपनी बात को कहना, अपने-आप में ही सबसे बड़ा द्वन्द जैसा महसूस हो रहा है | रुसी अभिनेता, निर्देशक, सिद्धान्तकार कोंस्तान्तिन स्तानिस्लाव्यस्की के शब्दों में कहें तो 'मेरे काम संभवतः परिपूर्ण नहीं हैं, पर इनमें से एक पद्धति विकसित हो सकती है' मैं शिक्षक प्रशिक्षण के सन्दर्भ में बातें कर रहा हूँ | 'शिक्षा में कला एवं रंगमंच' का सफ़र मेरे लिए ठीक उसी प्रकार हैं, जैसे वीरान जंगल में अपने पथ की तलाश, क्योंकि मेरी तैयारी और समझ रंगमंच को लेकर थी जबकि मेरे सामने प्रश्न शिक्षा में रंगमंच पर | मुद्दे की बात यह है कि शिक्षा में कला एवं रंगमंच विषय पर अनेक विचारकों, अभ्यासकों एवं शिक्षाविदों द्वारा बहुत सारी बातें कही, सुनी और लिखी जा चुकी हैं लेकिन धरातल पर उस विचार को कैसे लाया जाय इसको लेकर कम ही काम देखने को मिलता है |

यदि हम धरातल पर आने में होने वाली चुनौतीयों पर एक नज़र डालें तो पाएँगे :-

1. आज भी कला एवं रंगमंच को लेकर सामाजिक, पारिवारिक एवं शैक्षिक रूप से स्वीकार्यता का बहुत बड़ा अभाव है |
2. एक ऐसा शिक्षित वर्ग जो स्वीकार्यता एवं अस्वीकार्यता के बीच के छद्म जाल में फँसा हुआ है, जो कुछ भी, कैसे भी कर देने को कला एवं रंगमंच' समझने का भ्रम पाले हुए हैं |
3. शिक्षण-प्रशिक्षण में मोबाइल और इंटरनेट की सुविधा कुछ मामलों में वरदान कम अभिशाप अधिक है |
4. आख़िर शिक्षा में कला एवं रंगमंच क्यों करें? शिक्षक बनने के लिए अथवा रंगकर्मी या कलाकर्मी बनने के लिए यह प्रश्न आपको जितना सरल दिखता है इसका व्यवहारिक पक्ष उतना ही जटिल है |
5. प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर अन्य विषयों की तरह एक स्वतंत्र विषय के रूप में विधिवत कला एवं रंगमंच की शिक्षा का अभाव | जबकि शिक्षा का मूल उद्देश्य सर्वांगीण विकास है |
6. विद्यालय अथवा महाविद्यालय में कला एवं रंगमंच का वातावरण निर्माण, समय का प्रबंधन, विषय की स्वतंत्रता, वजट आदि हैं जो चुनौती तो है, लेकिन यह एक वास्तविक चुनौती है |

तमाम तरह के चुनौतियों के बीच काम करते हुए धीरे-धीरे अपने पथ की तलाश में :

शिक्षण प्रशिक्षण से जुड़े प्रिय प्रशिक्षु एवं प्रशिक्षकगण जिस तरह रंगमंच का सामान्य उद्देश्य, ज्वलंत मुद्दों को सामने लाना है, न की उसका निदान करना | उसी तरह मेरे अनुभव भी आपको कोई निदान नहीं देगा, लेकिन शायद निदान की प्रक्रिया में ले जा सकता है ! मैं बात कर रहा हूँ "श्रृंखलाबद्ध नाट्य" की, यह आपको धारावाहिक अथवा वेवसिरिज़ जैसा लग रहा होगा लेकिन, यह मेरे द्वारा किए गए एक प्रयोग के रूप में है जो अब मेरा कार्य-शैली बन चुका है |

एक दिन मुझे प्रतिदिन की तरह काम को शुरुआत करना था, मौका 'शिक्षक दिवस' का था, मैं बहुत परेशान भी था की अचानक मेरी नज़र सामने परी एक फूलों की बनी माला पर गयी और बस मेरी परेशानी का समाधान मिल गया और उसी समय मेरे अन्दर तय हुआ की अब आगे जो भी काम करूँगा वे सभी श्रृंखलाबद्ध | "श्रृंखलाबद्ध नाट्य" क्या, क्यों एवं कैसे पर हम अपने अगले लेख में विस्तार से बातें रखेंगे | अपने लेखनी को अल्प-विराम देने से पहले उन तमाम लोगों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिसके कारण यह संभव हो पाया |

रोशन कुमार - सहायक प्राध्यापक

Do You Know Your Constitution?

1. From which country have the fundamental rights in the constitution of India been adopted?
   भारत के संविधान में मौलिक अधिकारों को किस देश से लिया गया है?
2. From which country has the provision of concurrent list been included in the constitution?
   संविधान में समवर्ती सूची का प्रावधान किस देश से लिया गया है?
3. How many types of freedom are described in the preamble of the constitution?
   संविधान की उद्देशिका में कुल कितनी स्वतंत्रताओं का वर्णन है ?
4. In which part of the constitution are the articles related to citizenship mentioned?
   नागरिकता से सम्बंधित अनुच्छेद संविधान के किस भाग में दिए गए हैं?
5. Which article of the constitution describes the fundamental duties?
   मूल कर्तव्यों का वर्णन संविधान के किस अनुच्छेद में है ?
6. From which country was the idea of federal system borrowed?
   भारत की संघीय व्यवस्था किस देश से संबंधित है।
7. How many seats in the Lok Sabha are reserved for the Scheduled Tribe candidates?
   अनुसूचित जनजाति के लिए लोकसभा में कितनी सीटें आरक्षित हैं?
8. From which country was the idea of incorporating Liberty and Fraternity in the Constitution of India derived?
   भारत के संविधान में स्वतंत्रता और बंधुत्व को शामिल करने का विचार किस देश से प्रेरित था ?

Compiled by Dr. Rajwant Singh (Assistant Professor)

Answers : 1) USA 2) Australia 3) Five 4) Part-2 5) Article 51A 6) Canada 7) Forty Seven 8) France

National Education Day

National Education Day was celebrated in the college auditorium on 11th November 2022 on the occasion of the birth anniversary of Maulana Abul Kalam Azad, the first Education Minister of independent India.

The students of B.Ed. & D.El.Ed. put up a play based on untouched moments of their school life. Students and faculty also presented speeches on the life of Maulana Abul Kalam Azad and the lost dignity of teachers in the country in the current times.

Chairman, Sri Ranjit Sinha who was present on this occasion,spoke about the implementation of educational policies in India.

Diwali Celebration

Students of Amaltas College of Education under the banner of National Service Scheme presented a 'nukkad natak' in Indrapuri market to spread awareness about the depleting quality of the air in our surroundings. The message was to motivate people to celebrate Diwali with fewer crackers and more hand made diyas which are environment friendly. This will also help the poor families engaged in the business of making diyas to earn their livelihood.

On this occasion, our trustee, Ms.Saloni Sinha greeted the local residents of Indrapuri village and presented them with candles and sweets.

भारतीय भाषाएँ

भाषा किसी भी विश्वविद्यालय में जन्मी या उपजी हुई चीज नहीं है. दुनिया का कोई भी विश्वविद्यालय यह दावा नहीं कर सकता कि भाषा उसके यहाँ जन्मी है. भाषा सामाजिक विमर्श से जन्म लेती है और सामाजिक विमर्श से आगे बढ़ती है.

यह पाँच भाषी क्षेत्र हैं जो बिहार के भूगोल के आधार पर विभक्त हैं , मैथिली, भोजपुरी, अंगिका, बज्जिका और मगही, यह पाँच भाषाएँ कभी भी आधुनिक भारतीय शिक्षा की माध्यम भाषा नहीं रही हैं. लेकिन बीसवीं सदी के आठवें दशक तक प्राथमिक विद्यालयों की यह सारी भाषाएं समझ का माध्यम रही हैं. पाठ्य पुस्तक हिंदी में होती थी लेकिन शिक्षक स्थानीय होते थे, इसलिए जो समझ की भाषा हुआ करती थी वह स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा हुआ करती थी. जैसे ही आप क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग करते हैं बच्चों के सीखने की गति बढ़ जाती है.

जिस राज्य ने कक्षा 6 से अंग्रेजी पढ़ाई, डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद जैसे विद्वानों को जन्म दिया. कहने का तात्पर्य यह है कि अपनी भाषा सीखने से दूसरी भाषा सीखने में कोई बाधा नहीं पहुँचती . लेकिन हमारी आधुनिक भारतीय शिक्षा पद्धति ने मुझे यह सिखाया है कि यदि तुम बड़े होना चाहते हो तो अपनी भाषा से निकलो. अपनी भाषा से कटोगे तभी बड़े बनोगे.

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में बदलाव आवश्यक है, पुनरुत्थान आवश्यक है क्योंकि भारतीय शिक्षा पद्धति भारतीय जड़ों से नहीं निकली, भारतीय शिक्षा पद्धति भारतीय सांस्कृतिक अनुभूति से नहीं निकली, भारतीय शिक्षा पद्धति भारतीय ऐतिहासिक अनुभूति से नहीं निकली इसलिए भारत के प्रत्येक व्यक्ति की कामना को पूर्ण नहीं करती . भारत के राष्ट्रीय जीवन ध्येय के अनुरूप नहीं.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जब आई उसमें एक खास बात मुखर होकर निकली- भारतीय शिक्षा व्यवस्था भारतीयता की जड़ों में ही हो और भारतीयता तब तक नहीं हो सकती जब तक हम उसे भारतीय भाषाओं के साथ नहीं जोड़ेंगे. इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आने के पश्चात 2021 में नवंबर के महीने में शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के माध्यम से भारतीय भाषा समिति का गठन हुआ जो हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आई है उसने हमसे उम्मीद की है कि हम भारत के बहुभाषिक परिदृश्य को समझें . इसके पहले शैक्षिक दस्तावेजों में हमने यह निर्धारित किया था कि त्रिभाषा सूत्र हमारा माध्यम होगा.

अगर हम हिंदुस्तान के नक्शे को ध्यान से देखें, कैसा है हमारा प्यारा वतन, दुनिया में अकेला ऐसा देश जहाँ इतनी भाषाएं बोली जाती हैं. अगर आप भारत के नक्शे को देखेंगे तब आपके मन में चुनौती और मोहब्बत दोनों एक साथ पैदा होगी . एक ऐसा देश जहां पाँच भाषा परिवार की भाषाएं बोली जाती हैं ; जैसे ही आपके कानों में पाँच भाषा परिवार आते हैं तो कुछ सवाल मन में उभरते हैं कि क्या इन भाषा परिवारों में संवाद की कोई परंपरा रही है? और संवाद की परंपरा रही है तो अचानक संवाद की वह परंपरा हमारी नजरों से ओझल कैसे हो गई.

भारत में संसार के 5 भाषा परिवारों की अनेक भाषाएं बोली जाती है -

1. भारोपीय
2. द्रविड़
3. तिब्बती बर्मी
4. अग्नेय भाषा परिवार और
5. आर्य भाषा परिवार

बहुभाषिकता हमारी बहुत बड़ी शक्ति है और इसलिए11 दिसंबर भारतीय भाषा दिवस के तौर पर मनाया जा रहा है. सुब्रमण्यम भारती हमारे देश के महान बहुभाषिक कवि रहे हैं, उनके जन्मदिवस पर इसको मनाया जा रहा हैं .

भारतीय भाषाओं को तब तक समृद्ध नहीं किया जा सकता जब तक उसके शब्द भंडार समृद्ध नहीं . और इसके लिए एक बड़ी परियोजना का गठन हुआ है जिसको भारतीय भाषा समिति ने 'शब्दशाला' नाम दिया है. वैज्ञानिक शब्दावली व तकनीक आयोग और भारतीय भाषा समिति शिक्षा मंत्रालय मिलकर इस शब्दशाला परियोजना पर कार्य कर रही है . भाषाओं के बीच तालमेल और उनको सीखने के लिए किसी भी प्रकार का प्लेटफार्म नहीं है. इसलिए भारतीय भाषा समिति 'भाषासागर' नाम की एक बड़ी परियोजना पर कार्य कर रही है, जो भारतीय भाषा संस्थान मैसूर के साथ मिलकर किया जा रहा है, जिसके माध्यम से जो भारत की तमाम भाषाएं हैं उन भाषाओं की बुनियादी समझ हो पाए . एक 'ऐप' बनाने की बात चल रही है जिसमें 10000 से ज्यादा बोली जाने वाली भाषाएं हैं उन सभी भाषाओं का ऐप में शामिल करने की योजना है और अभी फिलहाल 75 भाषाओं पर कार्य किया जा रहा है. भारतीय भाषाओं में सामग्री निर्माण की जा रही है. बहुभाषिकता की वजह से भाषाओं का मामला कितना पेचीदा हो सकता था लेकिन क्या खूबसूरत बात है कि भारत के लोगों ने इस पर बहुत खूबसूरत तरीके से कार्य कर रहे हैं .

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा आई उसमें भी बहुभाषिकता की बात की गई है. हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने मातृभाषा और बहुभाषिकता की वकालत इसलिए की है क्योंकि भारतीय ज्ञान का अनमोल खजाना भारतीय भाषाओं में छिपा है. आप पाएंगे संवेदना के स्तर पर क्या कारण होगा जो तेलुगु में लिखा जा रहा है वही तमिल में लिखा जा रहा है, वही हिंदी में लिखी जा रही है, वहीं उड़िया में लिखी जा रही है. सभी के सभी आंदोलन एक साथ क्यों पैदा होते हैं . इसका मतलब भारत में अलग-अलग भाषाओं में बोलने वाले लोग संवेदना के स्तर पर एक ही हैं . उच्च शिक्षा में ऐसे शोधों को बढ़ावा देने की जरूरत है जिससे यह भाषाएं और भी नजदीक आएँ .

- शशि कुमार शेखर (सहायक प्राध्यापक)

क्या आप जानते हैं ?

आज से 5000 साल पहले सिन्धु घाटी सभ्यता के लोग केवल कांस्य धातु के बारे में जानते ही नहीं थे वरण उसका उपयोग बर्तन बनाने, औज़ार बनाने और मूर्ति बनाने में भी करते थे. यह मूर्ति जो चित्र में है वह कांस्य की बनी है. कांस्य एक मिश्र धातु है जो तांबा, जस्ता और टिन जैसे धातुओं को मिलाकर प्राप्त होता है. सिन्धु घाटी सभ्यता के अति प्राचीन काल में ही ढलाई के लिए 'सिरे पेड़ु' यानि लुप्त मोम तकनीक सीख ली थी. 'लुप्त मोम' (lost wax process) एक जटिल प्रक्रिया है. इसके प्रथम चरण में प्रतिमा का मोम प्रतिरूप हांथों से तैयार किया जाता था फिर बनाई गयी प्रतिमा के चारों ओर मिट्टी, रेत और गोबर के लेप की मोटी परत लगाते थे. इसके एक खुले सिरे पर मिट्टी का प्याला बना दिया जाता था और उस सांचे को आग पर रख देते थे जिससे अन्दर का मोम पिघलकर बाहर निकल जाता था. तदुपरांत उसमें प्याले की मदद से पिघली हुई धातु डाली जाती थी, जैसे जैसे धातु नलिकाओं में बहती थी मोम की प्रतिमा का आकार ले लेती थी. बाद में प्रतिमा को छेनी या रेती से चिकना बनाया जाता था. धातु ढलाई की यह पूरी प्रक्रिया एक धार्मिक अनुष्ठान की तरह संपन्न किया जाता था.

- जगमोहन चौधरी (सहायक प्राध्यापक)

JUMBLE TIME

D R F Y A Y

E B E Z E R

ANSWERS IN NEXT EDITION

A H T E D E

S Y A L C S

National Education Policy 2020

The National Education Policy of India (NEP 2020) launched by the Union Government on 29th July 2020 outlines the vision of the new education system of India. It is a comprehensive framework work from elementary education to higher education as well as vocational training in both rural and urban India. The NEP 2020 emphasizes on numerous changes in India's education policy. It aims at the universalization of education from pre-school to the secondary level with hundred percent Gross Enrollment Ratio(GER) by the year 2030. To build a nation it is essential to strengthen the foundation which is Early Childhood Care and Education (ECCE) which has been recognised by NEP 2020 and the curricular structure of 5+3+3+4 is a result of it. In the first 5 years of pre primary education quality learning and assessment (PARAKH) is also included in order to strengthen the pillars of foundation of future learning.

Speaking of higher education, high performing Indian universities will be encouraged to set up campuses in other countries, and similarly, selected universities e.g., those from among the best 100 universities in the world will be invited to operate in India.

The success of the New Education Policy will depend on its implementation. India is a country with the largest young population and it's future will depend on the quality education opportunities provided to the youth.

Naina Arya (D.El.Ed. 2021-23)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति - २०२०

नये भारत की शुरुआत है,
इस नई शिक्षा नीति का कुछ नया प्रयास है.

अब केवल अंग्रेजी ही नहीं , अपनी भाषा भी बोलेंगे,
भोजपुरी, अवधि, हिंदी से पूरे विश्व को जोड़ेंगे.

अगर लोग कहें कि अंग्रेज़ी के बिना, न कुछ हो पायेगा,
तब आर्यभट्ट , सुश्रुत, वशिष्ठ का काम गिनाया जाएगा.

अब विद्यालय अपना घर लगेगा, हम खुलके प्रश्न पूछ पाएंगे,
अब अंग्रेज़ी के डर से हम अपनी डाउट-बर्डन न बढ़ाएंगे.

अपनी भाषा में अब हम सारे ज्ञान बटोरेंगे,
अब खेल - खेल में हम अपनी बुद्धिमता को टटोलेंगे.

अब अपने घर से भला कौन दूर जाना चाहेगा?
जब विद्यालय अपना घर लगे तब कौन अनुपस्थित हो पायेगा.

अब उपस्थिति शत प्रतिशत होगी,
अब करके चीज़ों को सीखेंगे,
अब भारतवर्ष का नया रूप, सब दुनिया वाले देखेंगे.

परीक्षा नहीं अब पर्व होगा,
हर बच्चा अब निपुण होगा,
इस समग्र शिक्षा नीति का, बहुत ही अच्छा फल होगा.

- अमीषा शुक्ला (बी.एड. 2022-24)

Our Student's Success Story

For me success is not a polished story, because challenges and problems which were faced by me were the fuel for my success. In my life, I perceived success as a journey not a destination.

Prior to charting out my career path, people discovered the teacher in me. These were none other than my own ACE's (Amaltas college of Education) educators and my 2 017-2019 B.Ed. batch mates.

I took admission here without thinking whether or not I really wanted to be a teacher. So, it was by chance and not by choice that I decided to join this course. Amaltas College of Education gave me the opportunity to take the stage in a stride and express my opinion fearlessly. Through various activities, seminars, micro teaching, practice teaching and cultural programs my self confidence rose to new heights.

I always look upon the brighter side of life rather than regretting for anything. Prior to taking up my first task as a government teacher someone asked me "Why would anyone ever become a teacher?" I would like to tell them why it is worth it. Being a teacher, I have immense responsibilities and privileges. What I learned at ACE gave me the reason to push forward and motivate students in order to succeed in life.

I've found that the more I provide, the more I get. This is not in terms of material gains which my job as a teacher offers me but for my spiritual happiness also. My goal as a teacher is to translate actions into results. Some teachers teach for others to learn which does not represent me but the teachers who teaches for others' accomplishment, is me.

I would like to end by sharing the secret recipe for my success story as a teacher which are Hope, Strength, Dedication, Enthusiasm and Passion for pupils and work and finally never giving up. At the end, I would say that I am thankful to God that I am bestowed with these gifts that enabled me to translate my success story from my thought to real life.

Anjali Soni - Government School Teacher

UPCOMING EVENTS

DECEMBER 2022

3rd December 2022 : First President of India, Bharat Ratna Dr Rajendra Prasad's Birth Anniversary (3 December 1884 - 28 February 1963) celebration in college by students, faculty and staff members.

11th December 2022 : Bhartiya Bhasha Diwas celebration - It marks the Birth Anniversary of poet 'Subramania Bharti' a pioneer of modern Tamil poetry.

23rd December 2022 : Christmas Celebration in college by students, faculty and other staff members

JANUARY 2023

23rd January 2023 : Birth Anniversary celebration of Netaji Subhash Chandra Bose (23 January 1897 - 18 August 1945)

26th January 2023 : Republic Day celebration in the college by the Trustee, Students, Faculty and other staff members.